BRABU. Muzaffarpur.

Degree -1st. Paper -II

## ग्राम (Village)

रेडफील्ड (Redfield) का विचार है कि गाँव का तात्पर्य किसी विशेष विशेष स्थानीय क्षेत्र से नहीं होता बल्कि गाँव एक जीवन-विधि (Way of life) है। इसका तात्पर्य है कि जिस स्थान पर लोग एक दृढ़ सामुदायिक भावना से बँधे रहकर परम्परागत ढंग से व्यवहार करते हैं, उस स्थान को एक गाँव कहा जा सकता है। अनेक विद्वानों ने कुल जनसंख्या तथा जनसंख्या के घनत्व के आधार पर गाँव को परिभाषित करने का प्रयत्न किया है।

वास्तव में उपर्युक्त विचारों से किसी भी आधार पर गाँव को परिभाषित कर सकना कठिन है। इसी प्रकार अधिकांश गाँवों में सभी व्यक्ति कृषि के द्वारा ही आजीविका

उपार्जित नहीं करते बल्कि अनेक उद्योगों और दूसरे व्यवसायों द्वारा भी आजीविका उपार्जित करते हैं। इस आधार पर कहा जा सकता है कि गाँव वह समुदाय है जिसमें व्यक्तियों के सम्बन्ध सरल, प्राथमिक तथा परम्परागत होते हैं एवं जिसके अन्तर्गत उत्पादन का उद्देश्य व्यक्तियों द्वारा अपनी प्राथमिक आवश्यकताओं को पूरा करना होता है।

उपर्युक्त रूप में गाँव का विकास किस प्रकार हुआ? इसे अगबर्न ने तीन प्रमुख स्तरों द्वारा स्पष्ट किया है—

(i) सबसे पहला स्तर शिकार करने और भोजन संकलित करने का स्तर था। इस स्तर पर लोग छोटे-छोटे समूहों में हमेशा स्थान परिवर्तन करते रहते थे। चारों ओर शक्ति का साम्राज्य था। जंगली जानवरों को मारकर और पौधों की खाने योग्य जड़ों को खाकर ही व्यक्ति अपना पेट भरते थे। इसी स्तर पर गाँव किसी समुदाय का अस्तित्व नहीं था।

(ii) दूसरा स्तर पशु-पालन का स्तर था जिसमें पशुओं को मारने के स्थान पर उनको पाल कर रखना आरम्भ हो गया। स्थान परिवर्तन में कुछ कमी हो जाने के कारण लोगों ने साथ-साथ मिलकर रहना आरम्भ कर दिया। इस समय पारिवारिक जीवन को एक स्पष्ट रूप अवश्य मिलने लगा था लेकिन लोगों के बीच अधिक

सहयोग विकसित न हो सकने के कारण गाँवों की स्थापना नहीं हो सकी थी। (iii) तीसरे स्तर में लोगों ने एक स्थान पर स्थाई रूप से रहकर खेती के द्वारा आजीविका उपार्जित करना आरम्भ कर दिया। इसके फलस्वरूप गाँवों का विकास होना आरम्भ हो गया। इतना अवश्य है कि इस स्तर के आरम्भिक काल में गाँवों में न तो किसी के पास व्यक्तिगत सम्पत्ति होती थी और न ही लोगों के व्यवहारों को नियन्त्रित करने के लिए नियमों की कोई सामान्य व्यवस्था थी। कुछ समय बाद जब व्यक्तिगत सम्पत्ति की भावना बढ़ने लगी तो खेती का कार्य व्यक्तिगत रूप से किया जाने लगा। ऐसे गाँवों को हम मध्यकालीन गाँव कहते हैं। आधुनिक गाँवों की नींव तब पड़ी जब कृषि में श्रम-विभाजन और विशेषीकरण को महत्व दिया जाने लगा। यह स्तर गाँवों के वर्तमान रूप से सम्बन्धित है।